विचार बिन्दु

वह जो अपने प्रियजनों से अत्यधिक जुड़ा हुआ है। उसे चिंता और भय का सामना करना पड़ता है। क्योंकि सभी दुःखों कि जड़ लगाव है। इसलिए खुश रहने कि लिए लगाव छोड़ दीजिये। –चाणक्य सुविचार

सम्मान: क्यों, किसका और कैसे?

यह एक कृतज्ञ समाज का लक्षण है कि वह अपने बीच रहने वाले गुणीजन का सम्मान करे। गुणी अनेक अर्थों और संदर्भों में हो सकते हैं, और यह गुणग्राहक पर निर्भर करता है कि वह किसके किस गुण पर मुग्ध होता है। कोई पराक्रम पर मुग्ध हो सकता है तो कोई संवेदनशीलता पर, कोई समृद्धि पर मुग्ध हो सकता है तो कोई त्याग पर, कोई ज्ञान पर मुग्ध हो सकता है तो कोई सहज बुद्धि पर। गुणों के अनेक, बल्कि कहें अगणित आकार-प्रकार हो सकते हैं। इधर हम अपने समाज में सम्मान का चलन बढ़ा हुआ पाते हैं और इसे शुभ माना जा सकता था। लेकिन जब हम सम्मानों के इस गोरखधंधे को देखते हैं तो शुभ के अतिरिक्त भी काफी कुछ नज़र आता है।

सम्मान करने वाले सम्मान के पात्र का चयन करने में जितनी मेहनत करते हैं, उससे ज़्यादा सम्मान करने वाले के चयन पर करते हैं। चयन पर भी और उसे सम्मान करने के लिए लाने पर भी। यह सम्मान करने वाला प्राय: कोई उच्च पदस्थ व्यक्ति होता है। कोई मंत्री, कोई जन प्रतिनिधि, कोई अफसर, कोई धर्माचार्य, कोई ऐसा व्यक्ति जो व्यावसायिक रूप से बहुत सफल हो। इस अंतिम श्रेणी के व्यक्ति को आजकल एक नया और ज़्यादा सम्मानजनक पदनाम दे दिया जाता है- समाज सेवी। अब ये सारे लोग बहुत व्यस्त होते हैं, इनकी उपलब्धता तो दूर की बात है, इन तक पहुंच पाना ही कठिन होता है। तो सम्मान आयोजित करने वाले व्यक्ति (या संस्थाएं) अनेक किस्म की जुगत भिड़ाकर जैसे-तैसे इन महान लोगों तक पहुंचते हैं और फिर न जाने कितने और कैसे-कैसे प्रयासों के बाद इनके बहुमूल्य समय में से कुछ समय प्राप्त करने में सफलता प्राप्त करते हैं। इनकी व्यस्तता का गुणगान अनिवार्यत: इनके स्वागत के समय किया जाता है। तभी हम जैसे अज्ञानियों को उनकी अत्यधिक व्यस्तता का पता चलता है।

दूसरी तरफ जिनका सम्मान किया जाना है उनके चयन का काम भी कम कठिन नहीं होता है। कुछ को आयोजक गण चुनते हैं और कुछ जैसे-तैसे धक्का-मुक्की या जोड़-बाकी-गुणा-भाग करके उस सूची में प्रवेश पा लेते हैं। होते-होते सम्मानितों की सूची काफी लम्बी हो जाती है। आखिर आयोजकों की भी तो मज़बूरियां होती हैं। इस लम्बी सूची के कारण कई सारी परेशानियां पैदा हो जाती हैं। सम्मान में तो ख़ैर ज़्यादा कुछ खर्चा होता नहीं है। शॉल, नारियल, माला, मान पत्र। इतना काफी होता है। जहां दस के लिए इनको जुटाया था वहां बीस-पच्चीस-पचास के लिए जुटा लिया जाता है। सम्मान में मितव्ययिता का एक रास्ता कोरोना ने भी दिखा दिया था, और उस रास्ते का सदुपयोग अब भी खूब सारे सम्मान प्रदाता कर रहे हैं। इस रास्ते पर चलने में ***हींग लगे न फिटकरी*** वाला मुहावरा काम आता है। यह रास्ता है ऑनलाइन सम्मान का। बस सम्मान का एक टेम्प्लेट तैयार करवा लें, उसमें लोगों के नाम भरते चले जाएं और फिर उस सम्मान पत्र को ई मेल से भेज दें। सम्मानित प्रतिभा उसी को सोशल मीडिया पर प्रदर्शित कर कृतार्थ होती रहेगी। समारोह में प्रदान किए जाने वाले सम्मान के संदर्भ में असल संकट तो समय का होता है। जिस या जिन महापुरुषों को सम्मान प्रदान करने के लिए बुलाया जाता है, उनके पास समयाभाव होता है। वे ज़्यादा समय कार्यक्रम में रुकने को तैयार नहीं होते हैं। वैसे भी इस तरह के कार्यक्रमों में औपचारिकताएं ही बहुत समय ले लेती हैं। स्वागत, माल्यार्पण, स्मृति चिह्न समर्पण - ये सब तो हैं ही, बड़े मेहमानों के सम्मान में उनके कद और पद के अनुरूप प्रशस्ति गान जितना ज़रूरी होता है उतना ही ज़रूरी उनके प्रवचन अमृत से लाभान्वित होना भी होता है। और इस बात के लिए हमारे बड़े लोगों की सराहना करनी पड़ेगी कि भले ही उनके पास कितना ही समयाभाव क्यों न हो, जहां भाषण देने का मौका आता है, वे इस समयाभाव की बंदिश से स्वयं को मुक्त कर लेते हैं। उनकी जिह्वा किसी बेलगाम अश्व की तरह दौड़ने लगती है। फिर न उन्हें समय का ध्यान रहता है न अवसर का। जितना और जैसा ज्ञान उन्होंने अर्जित किया है उस सबको वे बहुत उदारता से उपस्थित समुदाय पर बरसाते चले जाते हैं। इस सबके कारण आयोजकों के सामने यह संकट पैदा हो जाता है कि जिन्हें सम्मानित होने के लिए बुलाया गया है, उन्हें कैसे जल्दी से जल्दी निबटाया जाए।

सबसे ख़ास बात यह कि सम्मान करते वक्त सम्मानित को वाकई सम्मानित किया जा रहा है, या उसे एक कोने में खड़ाकर सम्मानित करने वाला ख़ुद सम्मानित हो रहा या अपना उल्लू सीधा कर रहा है। दुर्भाग्य की बात यह है कि आजकल अधिकांश सम्मानों का यथार्थ यही है। ऐसे में क्या यह उचित नहीं होगा कि जो लोग इस सारे खेल को समझते हैं कम से कम वे तो इस तरह सम्मानित होने से मना कर दिया करें?

बहुत सारे समझदार आयोजक ख़ास मेहमानों के आने से पहले सम्मान की घास काट कूट कर मैदान साफ़ कर देते हैं ताकि इन ख़ास मेहमानों का कीमती समय बर्बाद न हो। अभी हाल में राजस्थान के एक सरकारी आयोजन में भी ऐसा ही किया गया। कुछ अन्य आयोजक सम्मानितों को झुण्ड में खड़ा करके एक साथ सम्मानित करके समय की बचत कर लेते हैं। अगर सम्मानित का प्रशस्ति वाचन भी होना है तो उसे संक्षिप्त करके या सुपर एक्सप्रेस की गति से करके कीमती समय बचाया जाता है। आखिर समय तो बहुत कीमती होता है, ख़ास तौर पर मंचासीन महापुरुषों का! वैसे तो आयोजक अपनी तरफ से ही इस बात का ध्यान रखते हैं और अगर उनका ध्यान चूक जाए तो आमंत्रित अतिथि के दांये-बांये रहने वाले या फिर खुद अतिथि ही उन्हें कार्यक्रम जल्दी समाप्त करने के लिए कह देते हैं। इस तरह सम्मान प्रदान करने की रस्म अदायगी हो जाती है।

मैंने प्राय: यह देखा है कि इस तरह के कार्यक्रम से पहले और कार्यक्रम संपन्न हो जाने के बाद अखबारों को जो विज्ञप्तियां आयोजकों की तरफ से भेजी जाती हैं, उनमें मुख्य अतिथि, अध्यक्ष और अन्य विशिष्ट जन के भाषणों का तो खूब ज़िक्र होता है लेकिन जिन्हें सम्मानित किया गया उनके नामों और काम की बजाय उनकी संख्या देकर काम चला लिया जाता है - समारोह में पैंतीस विशिष्ट प्रतिभाओं का सम्मान किया गया! अभी एक संस्था की विज्ञप्ति देखी, जिसमें बताया गया कि उनके आयोजन में पांच सौ लोगों का सम्मान किया गया! ज़ाहिर है कि किसी भी ख़बर में पांच सौ लोगों का नाम नहीं दिया जा सकता। लेकिन जब पांच-सात सम्मानितों के भी नाम अनुपस्थित होते हैं तो अजीब लगता है। अजीब भी और बुरा भी। सोचने की बात यह भी है कि पांच सौ लोगों का एक साथ सम्मान करना उनका सम्मान है या अपमान!

यह सब देखकर मेरा मन क्षुब्ध हो जाता है। मैं सोचता हूं क्या ये सम्मान समारोह वाकई किसी या किन्हीं प्रतिभाओं को सम्मानित करने के लिए किए जाते हैं? या इनका मक़सद कुछ और होता है? जिस तरह से आम तौर पर इनका आयोजन होता है उसे देखकर तो ज़रा भी नहीं लगता कि कोई किसी का सम्मान करना चाह रहा है! असल में सम्मान तो एक बहाना होता है। इस बहाने से जैसे-तैसे बड़े लोगों का सान्निध्य प्राप्त करने का अवसर जुटाया जाता है। यह समझा जा सकता है कि सान्निध्य के प्रति इतनी ललक क्यों होती है! हो सकता है चंद भोले लोग बड़ों के साथ तस्वीर खिंचवा कर या उन्हें गुलदस्ता भेंट कर ही धन्य हो लेते हों, और ऐसे लोगों की भी हमारे समाज में कमी नहीं है। लेकिन जो असल खेल खेलते हैं वे बहुत सोच-समझकर यह सब करते हैं। वे इन प्रतिभाओं को सीढ़ी के तौर पर इस्तेमाल करते हैं। यह भी होता है कि इस तरह के सम्मान आयोजित करने वाले लोग या संस्थाएं ऐसा करके अपनी छवि को चमकाते हैं। बहुत सारे लाभ अर्जित करने के लिए इनका विश्वसनीय होना ज़रूरी होता है और यह विश्वसनीयता हासिल करने का एक तरीका ऐसे आयोजन करना भी है।

सम्मान हमारे देश में पहले भी होते रहे हैं। ऐसा नहीं है कि बड़ी राशि से ही कोई सम्मान महत्वपूर्ण हो जाता है। बहुत बार तो यह भी हुआ है कि बहुत बड़ी राशि के बावज़ूद विभिन्न कारणों से कोई सम्मान अपेक्षित गरिमा प्राप्त नहीं कर पाया है। याद करेंगे तो ऐसे भी अनेक उदाहरण याद आ जाएंगे जहां लोगों ने बहुत बड़े या बहुत बड़ी धनराशि वाले सम्मान अस्वीकार किए हैं, और ऐसे भी अनेक पुरस्कार याद आ जाएंगे, जिनके साथ राशि भले ही कम दी गई हो, उनका महत्व खूब रहा है। इसलिए किसी भी सम्मान के लिए उसके साथ प्रदान की जाने वाली राशि का अनिवार्य संबंध नहीं होता है। देखने की बात यह होती है कि सम्मान किस भावना से दिया जा रहा है, जिसका सम्मान किया जा रहा है वह वाकई उसका पात्र है या नहीं, उसका चयन कितनी गंभीरता और निष्पक्षता से किया गया है, और सबसे ख़ास बात यह कि सम्मान करते वक्त सम्मानित को वाकई सम्मानित किया जा रहा है, या उसे एक कोने में खड़ाकर सम्मानित करने वाला ख़ुद सम्मानित हो रहा या अपना उल्लू सीधा कर रहा है। दुर्भाग्य की बात यह है कि आजकल अधिकांश सम्मानों का यथार्थ यही है। ऐसे में क्या यह उचित नहीं होगा कि जो लोग इस सारे खेल को समझते हैं कम से कम वे तो इस तरह सम्मानित होने से मना कर दिया करें?

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

जनभागीदारी से टीबी मुक्त भारत

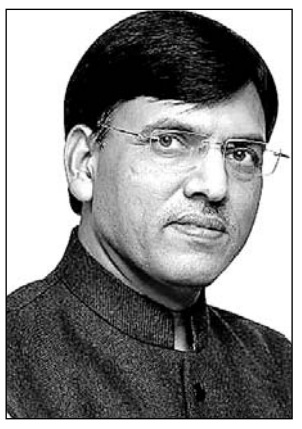

मनसुख मांडविया

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी हमेशा कहते हैं कि जब 130 करोड़ देशवासी एक साथ एक कदम आगे बढ़ाते हैं तो पूरा देश 130 करोड़ कदम आगे बढ़ जाता है।

प्रधानमंत्री जी का समृद्ध राष्ट्र के निर्माण में जनभागीदारी के प्रति अटूट विश्वास है। इस सामूहिक शक्ति और एकता की लहर से क्या हम नया भारत बना सकते हैं, जो 2025 में टीबी (क्षयरोग) मुक्त हो? प्रत्येक व्यक्ति का एक छोटा सा प्रयास भी एक 'जन-आंदोलन' को गति देता है। सरकार और जनता मिलकर जब कार्य करती है तो कोई भी अभियान शत-प्रतिशत सफल होता है। इसके उदाहरण हैं- स्वच्छ भारत अभियान, कोविड टीकाकरण अभियान और हाल ही में संपन्न 'हर घर तिरंगा' अभियान।

हम एक देश के तौर पर इसी सामूहिक जनभागीदारी के मंत्र के साथ 'टीबी मुक्त भारत' के लक्ष्य को प्राप्त करना चाहते हैं। जब विश्व ने दुनिया से टीबी उन्मूलन के लिए वर्ष 2030 का लक्ष्य रखा, तब देश के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने इसी सामूहिक जनभागीदारी में विश्वास रखते हुए भारत को टीबी मुक्त करने के लिए दुनिया से पांच वर्ष पहले यानी कि वर्ष 2025 का लक्ष्य निर्धारित किया। इसी लक्ष्य के संदर्भ में भारत सरकार ने राष्ट्रीय टीबी उन्मूलन कार्यक्रम के अंतर्गत नि-क्षय पोषण योजना की शुरुआत की। जिसमें 2018 से जून 2022 तक 62.71 लाख टीबी रोगियों को 1,651 करोड़ रुपये की सहायता राशि प्रदान की गई है। इसमें डीबीटी के माध्यम से टीबी रोगियों को 500 रुपये कि राशि सीधे उनके बैंक खाते में पहुंचाना भी शामिल है, जिससे उन्हें अपनी पोषक जरूरतों को पूरा करने में मदद मिली है।

मैं इस संदर्भ में उत्तर प्रदेश की माननीया राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल का उल्लेख भी करना चाहूँगा, जिन्होंने टीबी से पीड़ित मरीज़ों को गोद लेने का अभियान चलाया और उस अभियान को अपार सफलता मिली।

उनके कार्यों से प्रेरणा लेकर टीबी के इस अभियान को आगे और मजबूती प्रदान करते हुए भारत सरकार ने 'प्रधानमंत्री टीबी मुक्त भारत अभियान' के तहत 'नि-क्षय 2.0' पोर्टल शुरू किया है।

इस अभियान का शुभारंभ महामहिम राष्ट्रपति, श्रीमती द्रौपदी मुर्मु जी ने 9 सितंबर, 2022 को किया है।यह पोर्टल टीबी मरीजों को सामुदायिक सहयोग देने के लिए एक डिजिटल प्लेटफॉर्म होगा। इस पोर्टल पर जाकर समाज का कोई भी व्यक्ति या संस्था टीबी मरीजों की मदद 'नि-क्षय मित्र' बनकर कर सकता है।

इस अभियान का एक मुख्य भाग है टीबी मरीज़ों को गोद लेना। जिसका मूल उद्देश्य है कि हम समाज में टीबी मरीजों के प्रति प्रचलित भेदभाव को मिटा सके, टीबी से जूझ रहे लोगों के साथ हाथ मिलाना है, उनके लिए पोषण और सामाजिक समर्थन सुनिश्चित कर सकें तथा उनको सामान्य जीवन जीने में सहयोग कर सकें।टीबी मरीजों की सहायता हेतु 'नि-क्षय 2.0' पोर्टल (पूजे://म्दस्स्ल्हगूब्ल्ज्ज्दू.हर्ग्र्ठ्.गह/) पर लॉग-इन कर सामुदायिक सहयोग कर सकते हैं। इस पहल के तहत कोई भी व्यक्ति, सहकारी संस्थाएं, कॉर्पोरेट जगत, गैर-सरकारी संगठन, राजनीतिक दल और जनप्रतिनिधि भीटीबी रोगियों को सहायता प्रदान करने के लिए गोद ले सकते हैं।

टीबी मरीजों को तीन प्रकार से मदद की जा सकती है। पहली मदद, उनके पोषण की जरूरतों को पूरा करने के लिए पोषण आवश्यकता अनुसार पौष्टिक खाद्य सामग्री एक पोषण किट के रूप में उपलब्ध कराना। दूसरी मदद, अतिरिक्त लैब आधारित जांच में सहायता देना। तीसरा सहयोग, टीबी मरीजों को रोजगार प्राप्त करने के लिए जरूरी व्यवसायिक कौशल वर्धन द्वारा उनका क्षमता निर्माण करके रोजगार देने के लिए आगे आना। भारत के किसी भी जिले या ब्लॉक में टीबी रोगियों को आप न्यूनतम एक साल और अधिकतम तीन साल तक गोद लेकर उनका सहयोग कर सकते हैं।

गौरतलब है कि भारत सरकार द्वारा टीबी मरीजों के लिए मुफ़्त दवाई, टीबी संबंधित विविध मुफ़्त जांच तथा कई प्रकार की अन्य मदद भी की जाती है। परंतु मेरा मानना है कि टीबी मुक्त भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आप सभी की जनभागीदारी एक महत्वपूर्ण उत्प्रेरक के रूप में कार्य करेगी।

मैं आपसे अपील करना चाहता हूं कि जन-आंदोलन को सही मायने में साकार करने के लिए इस मिशन का हिस्सा बनें और टीबी के खिलाफ देश की इस सामूहिक लड़ाई में सक्रिय भागीदार बनें। जैसे हम कोविड के विरुद्ध सशक्त लड़ाई लड़ रहे हैं, उसी प्रकार टीबी उन्मूलन के लिए भी सामुदायिक समर्थन से एक संगठित लड़ाई लड़ेंगे।

मैं आज आपके सामने रामायण का एक अंश साझा करना चाहूँगा। जब प्रभु श्री राम लंका जाने के लिए पुल का निर्माण कर रहे थे तब मदद के लिए एक गिलहरी भी आई। प्रभु श्री राम ने उसके इस छोटे से योगदान को भी सराहा।

प्रधानमंत्री टीबी मुक्त भारत अभियान में देशवासी उस गिलहरी से प्रेरणा लेकर इस ईश्वरीय कार्य से भारत को टीबी मुक्त बनाने में एक बहुत बड़ा सेवा कार्य कर सकती है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि प्रधानमंत्री जी के सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास के इस मूलमंत्र से, मानवता का यह कार्य करने के लिए, इस जन-आंदोलन में आप अवश्य जुड़ेंगे और 2025 तक भारत को टीबी मुक्त कर देंगें।

टीबी हारेगा, देश जीतेगा।

–मनसुख मांडविया,
लेखक भारत सरकार में स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण तथा रसायन एवं खाद मामलों के केंद्रीय मंत्री हैं।

जयपुर-फुलेरा रूट पर यात्री गाड़ियों का लोगों को नहीं मिल पा रहा समुचित लाभ

■ **कोरोना से पूर्व आसलपुर जोबनेर रेलवे स्टेशन पर लगभग 26 यात्री ट्रेनों का यहां स्टॉपेज था जो घटकर आधा रह गया**

बोराज, (निसं)। कोरोना काल के बाद यात्री गाड़ियों के आने-जाने के समय वह स्टॉपेज को लेकर जो हालात यात्री गाड़ियों के बिगड़े हैं उनमें आज भी बहुत सुधार होना बाकी है। ग्रामीणों ने बताया रेलवे प्रशासन की सूझबूझ के अभाव में उपयुक्त समय में ट्रेनों का संचालन नहीं होने व कई यात्री गाड़ियों का अब आसलपुर जोबनेर रेलवे स्टेशन पर नहीं रुकने से यात्रियों को ट्रेनों का समुचित लाभ नहीं मिल रहा है।

जयपुर फुलेरा रेल मार्ग पर स्थित आसलपुर जोबनेर रेलवे स्टेशन जहां कस्बे सहित आसपास क्षेत्र के दर्जन भर गांवों ढाणियों के लगभग 4000 लोग रोजाना अपने दैनिक कार्यों को लेकर रेलों में सफर करते हैं वहां आज भी जयपुर बीकानेर, योग नगरी ऋषिकेश एक्सप्रेस, लीलन एक्सप्रेस, जैसलमेर दिल्ली एक्सप्रेस व हनुमानगढ़ एक्सप्रेस जैसी महत्वपूर्ण यात्री गाड़ियां अब नहीं रुकती जिनका कोरोना काल से पहले यहां स्टॉपेज था।

दैनिक यात्रीगण प्रेम शंकर शर्मा, जगदीश सारड़ी वाल भोलूराम कुमावत, ब्रजमोहन शर्मा आदि ने बताया कोरोना से पूर्व आसलपुर जोबनेर रेलवे स्टेशन पर लगभग 26 यात्री ट्रेनों का यहां स्टॉपेज था जो घटकर आधा रह जाने से यात्रियों को समय पर ट्रेन नहीं मिलने से काफी असुविधा का सामना करना पड़ रहा है।

साथ ही आज भी कई ट्रेनों में एमएसटी सुविधा अलाउ नहीं होने पर निश्चित ट्रेन के इंतजार में लोगों का घंटों कीमती समय यूं ही बर्बाद हो रहा है। ग्रामीणों ने बताया कोरोना काल से पहले सुबह शाम निश्चित समय पर यात्री गाड़ियों के आने जाने की जो सुविधा उपलब्ध थी वो अब नहीं मिल रही है।

यात्री गाड़ियों के यहां नहीं रुकने से मजदूर वर्ग काफी परेशान है। इस संदर्भ में रेलवे प्रशासन को क्षेत्र के विभिन्न संगठनों के माध्यम से सुधार के लिए कई बार अवगत कराया जा चुका है लेकिन प्रशासन द्वारा इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है।

ग्रामीणों ने बताया दोपहर बाद जोधपुर भोपाल एक्सप्रेस 3.45 व अमरापुर अरावली एक्सप्रेस 4:03 पर दोनों यात्री गाड़ी लगभग साथ-साथ आसलपुर जोबनेर से जयपुर की ओर जाती है उसके बाद 4 घंटे तक जयपुर जाने की यहां से कोई यात्री गाड़ी नहीं है इसमें काफी सुधार की गुंजाइश है।

दूसरा जोधपुर भोपाल यात्री गाड़ी का आसलपुर जोबनेर स्टेशन से जयपुर के बीच में 3 स्टेशनो पर स्टॉपेज के बाद जयपुर पहुंचने का एक घंटा 10 मिनट निर्धारित समय है वहीं दूसरी अमरापुर अरावली एक्सप्रेस यात्री गाड़ी काआसलपुर जोबनेर स्टेशन से नॉन स्टॉप सीधे जयपुर पहुंचने का एक घंटा 52 मिनट का समय निर्धारित कर रखा है जो रेलवे समय सारणी में चूक को दर्शाती है।

ग्रामीणों ने रेलवे प्रशासन से कोरोना काल में जिन ट्रेनों का ठहराव बंद हुआ था उन सभी ट्रेनों का फिर से पूर्व की भांति ठहराव करवाने व एमएसटी सुविधा की अनुमति दिलवाने सहित अन्य समस्याओं का सुधार कर राहत प्रदान करने की मांग की है।

घायल युवक को अस्पताल पहुंचा कलेक्टर ने दिखाई संवेदनशीलता

■ **आकाशीय बिजली गिरने से घायल हो गया था युवक**

उदयपुर, (कासं)। जिला कलेक्टर ताराचंद मीणा ने रविवार को संवेदनशीलता दिखाते हुए आकाशीय बिजली गिरने से घायल एक युवक को तुरंत तहसीलदार की गाड़ी में चिकित्सालय के लिये रवाना किया और परिजनों को ढांढ़स बंधाया।

कलेक्टर तारचंद मीणा कोटड़ा महोत्सव की तैयारियों की समीक्षा करने के पश्चात कोटड़ा से पानरवा मार्ग पर थे। इस दौरान पाथरवाड़ी गांव में अचानक ही कुछ ग्रामीणों की भीड़ देख अपनी गाड़ी रुकवाई। ग्रामीणों ने बताया कि लक्ष्मण नामक एक युवक जब वह मवेशी चारा रहा था तो उस पर आकाशीय बिजली गिर गई है एवं इस हादसे में तीन मवेशियों की मृत्यु भी हो गई है। इस पर कलेक्टर ने देखा कि लक्ष्मण अचेत पड़ा था और परिजन विलाप कर रहे थे। कलेक्टर ने बिना विलंब करते हुए तुरंत तहसीलदार की गाड़ी में घायल लक्ष्मण को रखवाया और तुरंत प्रभाव से अस्पताल पहुंचाने के निर्देश दिए। इस दौरान कलेक्टर ने अस्पताल के स्टाफ से भी बात कर त्वरित गति से इलाज करने के निर्देश दिए।

उदयपुर जिले में जिला कलेक्टर ताराचंद मीणा ने बिजली गिरने से घायल व्यक्ति को तहसीलदार की गाड़ी में अस्पताल पहुंचाया।

150 पलंग वाले नसीराबाद चिकित्सालय की व्यवस्था बदहाल

मौन धारण किए बैठे हैं जनप्रतिनिधि, विधायक भी गुमनामी के आगोश में

■ **चिकित्सकों व नर्सिंग स्टाफ की कमी के चलते अव्यवस्थाओं का अंबार लगा पड़ा है**

■ **करोड़ों रुपयों के चिकित्सा उपकरण होने के बावजूद विशेषज्ञों व नर्सिंग स्टाफ के अभाव में बेकार पड़े हुए हैं**

नसीराबाद, (निसं)। 150 पलंग वाले उपखंड के सबसे बड़े राजकीय सामान्य चिकित्सालय में चिकित्सकों व नर्सिंग स्टाफ की कमी के चलते अवस्थाओं का अंबार लगा पड़ा है। चिकित्सालय की बदहाली के चलते रोगियों को राज्य सरकार द्वारा मिलने वाली चिकित्सीय सुविधाओं का लाभ नहीं मिल पा रहा। राजकीय सामान्य चिकित्सालय में प्रतिदिन आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों सहित शहरी क्षेत्र के हजारों रोगियों की लंबी-लंबी कतारें लगी रहती हैं। राजकीय सामान्य चिकित्सालय की अव्यवस्थाओं के चलते रोगियों को निजी चिकित्सालय में जाकर महंगा इलाज करवाने पर मजबूर होना पड़ता है। इस संदर्भ में कई बार चिकित्सा प्रशासन को अवगत कराने के बावजूद चिकित्सा व्यवस्था में कोई सुधार होता नजर नहीं आता। राजकीय सामान्य चिकित्सालय में करोड़ों रुपयों के चिकित्सा उपकरण होने के बावजूद विशेषज्ञों व नर्सिंग स्टाफ के अभाव में बेकार पड़े हुए हैं। चिकित्सालय की चिकित्सा व्यवस्थाओं के सुधार के संदर्भ में विधायक रामस्वरूप लांबा को भी अवगत कराया गया था परंतु ऐसा लगता है कि विधायक को नसीराबाद शहरी क्षेत्र से कोई लेना देना नहीं है वे शहरी क्षेत्र में मात्र फीता काटने व उद्घाटन समारोह में भाग लेने आते है और वहीं से चले जाते हैं।

साथ ही अन्य जनप्रतिनिधियों को देखकर ऐसा प्रतीत होता है जैसे चिकित्सालय की अव्यवस्थाओं से उनका कोई सरोकार ना हो। चिकित्सा विभाग के अधिकारी नसीराबाद आकर चिकित्सालय को क्लीन चिट देकर चले जाते हैं या झूठे आश्वासन पत्रकारों को थमा देते हैं और कुछ समाचार पत्र चिकित्सालय व प्रभारी की तारीफ के पुल बांध देते हैं और चिकित्सालय की बदहाली पर पर्दा डाल देते हैं। जबकि हकीकत यह है कि अधिकारियों के आने की सूचना पाते ही चिकित्सालय में अव्यवस्थाओं को चंद घंटों के लिए दुरुस्त कर दिया जाता है वह चंद चापलूस लोगों को अधिकारियों के सामने पेश कर चिकित्सालय की बदहाली पर पर्दा डलवा दिया जाता है।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 12 सितम्बर, 2022

आश्विनी मास, तृतीया तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2079, उत्तरा भाद्र पद नक्षत्र प्रात: 6:59 तक, गंड योग प्रात: 9:30 तक, गर करण दिन 11:36 तक, चन्द्रमा मीन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-सिंह, चन्द्रमा-मीन, मंगल-वृष, बुध-कन्या, गुरू-मीन, शुक्र-सिंह, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज भद्रा रात्रि 11:07 से मंगलवार दिन 10:38 तक रहेगी। आज तीज का श्राद्ध, पंचक है। महापात योग दिन 2:20 से सांय 6:15 तक है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 7:47 तक, शुभ 9:19 से 10:54 तक, चर 1:55 से 3:28 तक, लाभ-अमृत 3:28 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 6:14, सूर्यास्त 6:32

मेष
घर-परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। आज अनावश्यक धन खर्च होगा। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है।

वृष
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। अटके हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। प्रतिष्ठित व्यक्तियों से व्यावसायिक संबंध बनेंगे। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

सिंह
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ने का भय बना रहेगा। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

कन्या
परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा।

तुला
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अस्त-व्यस्त व्यावसायिक कार्य व्यवस्थित होने लगेंगे। विवादित मामलों से राहत मिलेगी।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक सफलता से मनोबल ऊंचा रहेगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु
घर-परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में आपसी अनबन बढ़ने का भय बना रहेगा। अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। आज व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा।

मकर
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी।

कुंभ
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

मीन
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।